Volume 1 Issue 1 June. 2025

International Journal of Pedagogy, Health and Management research

मूल्य-आधारित शिक्षा और नैतिक विकास: वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समीक्षा

Dr. Kalpna Dongre*

1. Astt. Professor Institute of Art and Humanities
SAGE University Indore

Date of Submission 10/05/25
Date of Acceptance 12/05/25
Date Publication 01/06/25

सारांश (Abstract)

वर्तमान समय में जब समाज में नैतिकता, संवेदनशीलता और मूल्यों की गिरावट स्पष्ट रूप से देखी जा रही है, ऐसे में मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता और प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। यह लेख भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक विकास की भूमिका की समीक्षा करता है। लेख में मूल्य शिक्षा के उद्देश्यों, कार्यान्वयन की स्थिति, चुनौतियों और संभावित समाधान पर विस्तृत चर्चा की गई है। यह अध्ययन यह भी उजागर करता है कि किस प्रकार समावेशी, गतिविधि-आधारित और व्यवहारिक शिक्षा छात्रों में नैतिक विकास को बढ़ावा दे सकती है।

- **Keywords:** मूल्य-आधारित शिक्षा (Value-Based Education), नैतिक विकास (Moral Development), वर्तमान शिक्षा प्रणाली (Contemporary Education System), नैतिक शिक्षा (Moral Education), शैक्षिक चुनौतियाँ (Educational Challenges), नैतिक मूल्य (Ethical Values)

1. परिचय: मूल्य और नैतिकता की प्रासंगिकता शिक्षा में

वर्तमान युग में जहाँ विज्ञान, तकनीकी और भौतिक विकास ने मानव जीवन को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है, वहीं नैतिक मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं और चरित्र निर्माण की उपेक्षा भी सामने आई है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली का केंद्रबिंदु अधिकतर ज्ञान के संप्रेषण, परीक्षा आधारित मूल्यांकन और व्यवसायिक दक्षता तक सीमित हो गया है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में नैतिक दायित्व, समाज के प्रति सहानुभूति, आत्मानुशासन और मूल्यपरक निर्णय क्षमता का अभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसी संदर्भ में मूल्य-आधारित शिक्षा की प्रासंगिकता और आवश्यकता और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

मूल्य-आधारित शिक्षा केवल एक वैचारिक अवधारणा नहीं है, बल्कि यह शिक्षण के उस स्वरूप को दर्शाती है जो छात्रों के समग्र विकास — शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक — में सहायक होती है। यह शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, करुणा, सेवा, कर्तव्यपरायणता, अनुशासन और आत्मचिंतन जैसे गुणों से सुसज्जित करती है। महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद और डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे विचारकों ने भी शिक्षा में मूल्यों की भूमिका को अत्यंत आवश्यक बताया है।

ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में बढ़ती नैतिक चुनौतियों जैसे भ्रष्टाचार, हिंसा, आत्मकेन्द्रिता और सामाजिक विघटन के संदर्भ में मूल्य-आधारित शिक्षा को एक उपचारात्मक समाधान के रूप में देखा जा रहा है। यह विद्यार्थियों को जीवन में 'क्या करना चाहिए' और 'कैसे करना चाहिए' — इस द्वंद्व का समाधान देती है। इसलिए आज की शिक्षा प्रणाली में मूल्य और नैतिकता को पुनः केंद्र में लाकर ही एक समावेशी, संवेदनशील और न्यायसंगत समाज की रचना संभव है।

2. नैतिक विकास का महत्व वर्तमान युग में:

वर्तमान युग में जहाँ सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्तर पर अनेक जटिलताएँ विद्यमान हैं, वहीं नैतिक मूल्यों में क्षरण की प्रवृत्ति भी स्पष्ट देखी जा सकती है। शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य मात्र छात्रों को परीक्षा पास कराने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक, संवेदनशील मानव और नैतिक रूप से सशक्त व्यक्ति के रूप में तैयार करना चाहिए।

नैतिक विकास व्यक्ति के सोचने, समझने और व्यवहार करने के तरीके को प्रभावित करता है। जब विद्यार्थी नैतिक दृष्टिकोण से मजबूत होते हैं, तब वे समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को बेहतर रूप से समझते हैं और मानवीय दृष्टिकोण से कार्य करते हैं। इससे न केवल उनका व्यक्तिगत जीवन संतुलित होता है, बल्कि सामाजिक वातावरण भी स्वस्थ बनता है।

आज हम देख रहे हैं कि विद्यालयों और कॉलेजों में हिंसा, अनुशासनहीनता, आत्महत्या, और मानसिक असंतुलन जैसी घटनाएँ बढ़ रही हैं। इसका मुख्य कारण नैतिक शिक्षा की कमी है। यदि शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों को समाविष्ट किया जाए, तो छात्रों में आत्म-नियंत्रण, सहिष्णुता, सहानुभूति और सेवा-भाव का विकास किया जा सकता है।

इस प्रकार नैतिक विकास केवल एक वैकल्पिक घटक नहीं, बल्कि शिक्षा का मूल आधार होना चाहिए, जिससे एक सशक्त, संतुलित और मानवतावादी समाज की स्थापना संभव हो सके।

3. वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिकता की स्थिति और चुनौतियाँ

भारतीय शिक्षा प्रणाली में भले ही नैतिक शिक्षा को प्राथमिक कक्षाओं में एक विषय के रूप में सम्मिलित किया गया हो, परंतु उच्च शिक्षा स्तर पर इसका व्यावहारिक अभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। विद्यालयों और महाविद्यालयों में नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षण प्रक्रिया प्रायः केवल औपचारिकता तक सीमित रह गई है। इसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों के व्यवहार, दृष्टिकोण और सामाजिक सहभागिता पर पड़ा है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में जब शिक्षक और अभिभावक दोनों ही प्रतिस्पर्धा, अंकों और करियर की चिंता में व्यस्त रहते हैं, तब नैतिक गुणों को पोषित करने के लिए समय और स्थान दोनों ही सीमित हो जाते हैं। डिजिटल मीडिया, उपभोक्तावाद और वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं ने भी नैतिकता की परिभाषा को जटिल बना दिया है।

शिक्षकों को नैतिक शिक्षा प्रदान करने हेतु विशेष प्रशिक्षण नहीं दिया जाता, जिससे वे स्वयं नैतिक शिक्षा के महत्व और उसकी प्रभावी शिक्षण विधियों से अपरिचित रहते हैं। इसके अलावा पाठ्यक्रमों में नैतिक शिक्षा को अनुपूरक सामग्री के रूप में रखा गया है, जिससे विद्यार्थी और शिक्षक दोनों इसकी अनदेखी करते हैं।

चुनौतियाँ केवल पाठ्यक्रम स्तर तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि विद्यालयी वातावरण, सामाजिक मूल्यों का क्षरण, और नीति निर्धारकों की असंगत योजनाओं में भी देखी जाती हैं। जब तक नैतिक शिक्षा को शिक्षा प्रणाली की केंद्रीय भूमिका में नहीं रखा जाएगा, तब तक इसका समुचित प्रभाव विद्यार्थियों के जीवन में नहीं पड़ेगा। अतः इस दिशा में संरचनात्मक सुधारों की आवश्यकता है।

4. मूल्य-आधारित शिक्षा के लिए प्रभावी रणनीतियाँ

आधारित शिक्षा को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए एक बहुस्तरीय दृष्टिकोण आवश्यक है, जिसमें पाठ्यक्रम निर्माण से लेकर शिक्षक प्रशिक्षण और विद्यालयी वातावरण तक, सभी घटकों को मूल्यों के अनुरूप पुनः परिभाषित किया जाए।

प्रथम चरण में पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को एक पृथक विषय के रूप में न रखकर, बल्कि सभी विषयों के भीतर मूल्यों के अंतर्निहित समावेश को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। उदाहरणस्वरूप, इतिहास विषय के माध्यम से करुणा और सहिष्णुता, विज्ञान में ईमानदारी और सत्यनिष्ठा, तथा भाषा विषयों में संवाद कौशल और सहानुभूति का विकास किया जा सकता है।

द्वितीय, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को इस प्रकार संरचित किया जाना चाहिए जिससे शिक्षक स्वयं मूल्यों के प्रति सजग हों और उन्हें विद्यार्थियों में प्रभावी रूप से स्थानांतरित कर सकें। यह तभी संभव है जब शिक्षकों को नैतिक दुविधाओं, व्यवहार संबंधी चुनौतियों और सहानुभूतिपूर्ण शिक्षण विधियों पर प्रशिक्षित किया जाए।

तृतीय, विद्यालयी वातावरण को सहयोगात्मक, समावेशी और अनुशासित बनाया जाना चाहिए। छात्रों को अनुकरणीय उदाहरणों के माध्यम से नैतिक व्यवहार सिखाया जा सकता है। प्रार्थना सभा, नैतिक नाटक, सामाजिक सेवा परियोजनाएँ, और समूह चर्चाएँ विद्यार्थियों में मूल्यों के विकास में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

चतुर्थ, अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता भी अत्यंत आवश्यक है। जब विद्यालय और घर दोनों स्थानों पर समान नैतिक वातावरण उपलब्ध हो, तब छात्र उस पर आसानी से आचरण में उतार सकते हैं। इस प्रकार, प्रभावी रणनीतियाँ तभी सफल होंगी जब वे केवल सैद्धांतिक न होकर, व्यवहारिक रूप से शिक्षा प्रणाली के सभी स्तरों पर लागू की जाएँ।

5. नीति निर्माण में नैतिक शिक्षा का स्थान और सुझाव

शिक्षा नीति किसी भी राष्ट्र की भावी पीढ़ियों के निर्माण की आधारशिला होती है। भारत की नई शिक्षा नीति 2020 ने मूल्य-आधारित शिक्षा और नैतिक विकास को अपने प्रमुख उद्देश्यों में शामिल किया है, लेकिन इसका क्रियान्वयन अभी भी चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। नीति निर्माण के स्तर पर नैतिक शिक्षा को केवल औपचारिक घोषणाओं तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए, बल्कि इसे ठोस योजनाओं और संसाधनों के माध्यम से व्यावहारिक रूप देना आवश्यक है।

नीति निर्माताओं को नैतिक शिक्षा के लिए अलग से समय, सामग्री और मानव संसाधन निर्धारित करने की आवश्यकता है। पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा का प्रभावी एकीकरण तभी संभव है जब उसकी निगरानी, मूल्यांकन और पुनरीक्षण की स्पष्ट व्यवस्था की जाए। इसके अलावा, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में नैतिक शिक्षा के लिए विशेष पाठ्यक्रमों को अनिवार्य बनाना आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त, नीति में यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि नैतिक मूल्यों का आकलन केवल एक अलग विषय के रूप में नहीं बल्कि विद्यार्थियों के व्यवहार, उनके सामाजिक सहभाग, और सह-पाठयक्रमीय गतिविधियों के माध्यम से हो। उदाहरण के लिए, विद्यालयों में "मूल्य आचरण मूल्यांकन प्रणाली" लागू की जा सकती है जो छात्रों के व्यवहार आधारित प्रदर्शन को नियमित रूप से मापे।

नीति निर्माण में समुदाय, शिक्षकों और अभिभावकों की सहभागिता भी अत्यंत आवश्यक है ताकि नैतिक मूल्यों के संवर्धन में समाज की साझा भूमिका स्पष्ट हो सके। इस प्रकार, जब नैतिक शिक्षा को नीति निर्माण की मूलधारा में स्थान मिलेगा, तभी वह अपने वास्तविक लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकेगी।

6. निष्कर्ष (Conclusion)

मूल्य-आधारित शिक्षा और नैतिक विकास न केवल शिक्षा का पूरक हिस्सा हैं, बल्कि यह संपूर्ण शिक्षा प्रणाली की आत्मा माने जाने चाहिए। वर्तमान शिक्षा प्रणाली जहाँ अकादमिक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी दक्षता और व्यावसायिक उन्नति पर केंद्रित होती जा रही है, वहीं नैतिकता और मूल्यों का क्षरण सामाजिक और मानसिक समस्याओं को जन्म दे रहा है। विद्यार्थियों में बढ़ती असंवेदनशीलता, अनुशासनहीनता, मानसिक तनाव और नैतिक विचलन इस बात का स्पष्ट संकेत देते हैं कि अब समय आ गया है जब हमें शिक्षा की मूल आत्मा — नैतिकता और मूल्य — की ओर पुनः लौटना होगा।

इस लेख में प्रस्तुत विश्लेषण यह दर्शाता है कि मूल्य-आधारित शिक्षा केवल एक वैकल्पिक पद्धति नहीं, बल्कि जीवन निर्माण की अनिवार्य शर्त है। यह विद्यार्थियों को न केवल एक अच्छा विद्यार्थी या कर्मठ कर्मचारी बनाती है, बल्कि उन्हें एक उत्तरदायी नागरिक, संवेदनशील मानव और समाज के प्रति जागरूक सहभागी भी बनाती है।

सरकार, शिक्षक, अभिभावक और समाज — सभी को मिलकर नैतिक शिक्षा के पुनर्संरचना की दिशा में कार्य करना चाहिए। नीति-निर्माताओं को पाठ्यक्रम में मूल्यों का अंतर्निर्माण सुनिश्चित करना चाहिए,

शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नैतिक शिक्षा को प्रमुखता दी जानी चाहिए, और विद्यालयी परिवेश को नैतिकता के अनुसार संवर्धित किया जाना चाहिए।

इस प्रकार, एक संतुलित, संवेदनशील और नैतिक समाज की स्थापना के लिए आवश्यक है कि शिक्षा केवल ज्ञान का संप्रेषण न रहकर चरित्र निर्माण और मानवीयता के विकास का माध्यम बने।

7. संदर्भ सूची (References)

1. NCF (2005). National Curriculum Framework. NCERT, New Delhi.
2. UNESCO (2020). Education for Sustainable Development: A Roadmap. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.
3. Govt. of India (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Education, Government of India.
4. Kohlberg, L. (1981). Essays on Moral Development: Vol. I. The Philosophy of Moral Development. Harper & Row.
5. Rokeach, M. (1973). The Nature of Human Values. Free Press.
6. Bhatt, S. R. (1986). Knowledge, Value and Education: An Axio-Epistemological Perspective. Indian Council of Philosophical Research.
7. Sharma, R. A. (2008). Value Education and Education for Human Rights and Duties. R. Lall Book Depot.
8. Dash, B.N. (2003). Principles of Education and Educational Psychology. Neelkamal Publications.
9. Aggarwal, J.C. (2010). Essentials of Educational Psychology. Vikas Publishing House.
10. Pandey, R.S. (2007). Principles of Education. Vinod Pustak Mandir, Agra.
11. Singh, Y.K. (2007). Value Education. APH Publishing.
12. NCERT (2012). Education for Values in Schools – A Framework. NCERT, New Delhi.
13. Gandhi, M.K. (1957). Basic Education. Navjivan Publishing House, Ahmedabad.
14. Swami Vivekananda. (1987). Education and Man-Making. Advaita Ashrama, Kolkata.
15. UNICEF (2019). Learning for Life: The Role of Social and Emotional Learning in Education. United Nations Children's Fund.